Toppersnotes
Unleash the topper in you

RPSC

सहायक आचार्य

समाजशास्त्र

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

पेपर – 2 || भाग – 1

SIERRA INNOVATIONS

RPSC सहायक आचार्य पेपर – 2 (समाजशास्त्र)

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	ईकाई – I सामाजिक अनुसंधान	
1.	सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान का परिचय: अर्थ और दायरा	1
2.	सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकार	7
3.	सामाजिक अनुसंधान के प्रकार	14
4.	सामाजिक अनुसंधान में वैज्ञानिक पद्धति	22
5.	सामाजिक अनुसंधान में वस्तुनिष्ठता और मूल्य तटस्थता	28
6.	सामाजिक अनुसंधान में पूर्वाग्रह और व्यक्तिपरकता	36
7.	सामाजिक अनुसंधान में नैतिकता के मुद्दे	45
8.	समाजशास्त्रीय अनुसंधान में मॉडल	53
9.	समाजशास्त्रीय अनुसंधान में प्रतिमान	60
10.	समाजशास्त्रीय अनुसंधान में सिद्धांत निर्माण	67
11.	अनुसंधान डिजाइन: अर्थ और महत्व	75
12.	अनुसंधान डिजाइन के प्रकार	82
13.	परिकल्पना: अर्थ, प्रकृति और सूत्रीकरण	90
14.	परिकल्पना के प्रकार	97
15.	नमूनाकरण: अर्थ और प्रकार	105
16.	डेटा संग्रह की तकनीकें और विधियाँ	112

I
UNIT

सामाजिक अनुसंधान

सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान का परिचय: अर्थ और दायरा

परिचय

सामाजिक सर्वेक्षण और **सामाजिक शोध** समाजशास्त्रीय जांच के आधारभूत स्तंभ हैं, जो भारतीय समाज में सामाजिक घटनाओं की जांच, समझ और समाधान के लिए व्यवस्थित तरीकों के रूप में काम करते हैं। **सामाजिक सर्वेक्षण** सामाजिक मुद्दों का वर्णन, विश्लेषण या निदान करने के लिए जनसंख्या से डेटा एकत्र करने की एक संरचित विधि है, जिसका उपयोग अक्सर नीति-निर्माण और योजना बनाने के लिए किया जाता है। **सामाजिक शोध** , दायरे में व्यापक, सामाजिक संरचनाओं, प्रक्रियाओं और व्यवहारों के बारे में ज्ञान उत्पन्न करने के लिए व्यवस्थित जांच को शामिल करता है, जो मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टिकोणों को नियोजित करता है। दोनों डर्कहेम के अर्थ में सामाजिक तथ्य हैं, व्यक्तियों के लिए बाहरी और बाध्यकारी, अनुभवजन्य डेटा और सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि के माध्यम से सामाजिक समझ को आकार देते हैं। भारत में, सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक शोध जाति, वर्ग, लिंग और क्षेत्रीय गतिशीलता जैसी जटिल सामाजिक संरचनाओं का अध्ययन करने, विकास नीतियों और सामाजिक परिवर्तन को सूचित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

यह अत्यधिक विस्तृत अध्याय सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान का गहन अन्वेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें उनकी परिभाषाएँ, क्षेत्र, महत्व, ऐतिहासिक विकास, सैद्धांतिक आधार और भारतीय एवं राजस्थान-विशिष्ट संदर्भों में उनके अनुप्रयोगों को शामिल किया गया है। यह शास्त्रीय और भारतीय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों को एकीकृत करता है, और राजस्थान की शोध पद्धतियों, जैसे जाति सर्वेक्षण, जनजातीय विकास अध्ययन और जयपुर में शहरी सर्वेक्षण, पर ज़ोर देता है।

सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान का परिचय: अर्थ और दायरा

सामाजिक सर्वेक्षण का अर्थ

सामाजिक **सर्वेक्षण,** सामाजिक परिस्थितियों, व्यवहारों या मुद्दों का वर्णन, विश्लेषण या निदान करने के लिए एक निश्चित जनसंख्या से आँकड़े एकत्र करने की एक व्यवस्थित विधि है। इसमें मात्रात्मक या गुणात्मक आँकड़े एकत्र करने के लिए प्रश्नावली या अनुसूचियों जैसे संरचित उपकरण शामिल होते हैं, जिनका उपयोग अक्सर नीति निर्माण, सामाजिक नियोजन या विशिष्ट सामाजिक समस्याओं के समाधान जैसे व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए किया जाता है। सामाजिक सर्वेक्षणों की विशेषता यह है कि वे बड़े पैमाने पर आँकड़े एकत्र करने, प्रतिनिधित्व और अनुभवजन्य कठोरता पर केंद्रित होते हैं, जो उन्हें सामाजिक रुझानों को समझने और शासन को सूचित करने के लिए आवश्यक बनाता है।

- **प्रमुख विशेषताऐं** :
  - **व्यवस्थित डेटा संग्रहण** : विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित करने के लिए मानकीकृत उपकरणों का उपयोग करता है।
  - **जनसंख्या फोकस** : प्रतिनिधि डेटा के लिए विशिष्ट समूहों (जैसे, समुदाय, क्षेत्र) को लक्षित करता है।
  - **वर्णनात्मक और निदानात्मक** : सामाजिक स्थितियों (जैसे, गरीबी के स्तर) का वर्णन करता है या कारणों का निदान करता है (जैसे, बेरोजगारी कारक)।
  - **नीति-उन्मुख** : सरकारी नीतियों और सामाजिक हस्तक्षेपों की जानकारी देता है।
  - **गतिशील प्रकृति** : बदलते सामाजिक संदर्भों और तकनीकी प्रगति के अनुकूल होना।
- **भारतीय संदर्भ** : भारत में सामाजिक सर्वेक्षणों का व्यापक रूप से राष्ट्रीय जनगणना, गरीबी आकलन (जैसे, एनएसएसओ सर्वेक्षण) और स्वास्थ्य अध्ययन (जैसे, एनएफएचएस) के लिए उपयोग किया जाता है, जो जाति, लिंग और आर्थिक असमानताओं जैसे मुद्दों को संबोधित करते हैं।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में सर्वेक्षण जाति जनसांख्यिकी (जैसे, ओबीसी सर्वेक्षण), ग्रामीण गरीबी और जनजातीय विकास पर केंद्रित होते हैं, जो राज्य की नीतियों को सूचित करते हैं।
- **उदाहरण** : राजस्थान सरकार का जाति सर्वेक्षण आरक्षण नीतियों के लिए ओबीसी आबादी की पहचान करता है, जो सामाजिक नियोजन में सर्वेक्षण की भूमिका को दर्शाता है।
- **परीक्षा प्रासंगिकता** : प्रश्न अक्सर भारतीय और राजस्थान-विशिष्ट संदर्भों में सामाजिक सर्वेक्षण की परिभाषा, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

सामाजिक अनुसंधान का अर्थ

सामाजिक अनुसंधान , ज्ञान सृजन, सिद्धांतों का परीक्षण या सामाजिक मुद्दों पर विचार करने हेतु सामाजिक घटनाओं, व्यवहारों और संरचनाओं का एक व्यापक, व्यवस्थित अध्ययन है। इसमें मात्रात्मक (जैसे, सांख्यिकीय सर्वेक्षण) और गुणात्मक (जैसे, नृवंशविज्ञान अध्ययन) दोनों दृष्टिकोण शामिल हैं, जिनका उद्देश्य सामाजिक प्रक्रियाओं, संस्थाओं और गतिशीलता को समझना है। सामाजिक अनुसंधान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो अवलोकन, परिकल्पना परीक्षण और विश्लेषण पर आधारित है, और यह समाजशास्त्रीय सिद्धांत निर्माण और व्यावहारिक अनुप्रयोगों में योगदान देती है।

- **प्रमुख विशेषताऐं** :
  - **व्यवस्थित जांच** : कठोरता और वैधता के लिए वैज्ञानिक तरीकों का पालन करता है।
  - **सैद्धांतिक और व्यावहारिक** : ज्ञान उत्पन्न करता है और नीति को सूचित करता है।
  - **गुणात्मक और मात्रात्मक** : इसमें सर्वेक्षण, साक्षात्कार और नृवंशविज्ञान शामिल हैं।
  - **गतिशील प्रकृति** : सामाजिक परिवर्तन और पद्धतिगत प्रगति के साथ विकसित होती है।
  - **समाजशास्त्रीय फोकस** : जाति, वर्ग और लिंग जैसी सामाजिक संरचनाओं की जांच करता है।
- **भारतीय संदर्भ** : भारत में सामाजिक अनुसंधान जातिगत गतिशीलता (जैसे, एम.एन. श्रीनिवास का कार्य), लैंगिक असमानता और शहरीकरण का अध्ययन करता है, तथा शैक्षणिक और नीतिगत क्षेत्रों में योगदान देता है।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में शोध राजपूत जाति संरचनाओं, भील जनजातीय संस्कृतियों और जयपुर में शहरी विकास का पता लगाता है, जो राज्य की नीतियों को सूचित करता है।
- **उदाहरण** : राजस्थान में भील जनजातियों पर नृवंशविज्ञान अनुसंधान सांस्कृतिक प्रथाओं की जांच करता है, जिससे जनजातीय विकास नीतियों को सहायता मिलती है।
- **परीक्षा प्रासंगिकता** : प्रश्न भारतीय और राजस्थान-विशिष्ट संदर्भों में सामाजिक अनुसंधान की परिभाषा, दायरे और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान का दायरा

दायरा सामाजिक घटनाओं को समझने, नीति निर्धारण और सामाजिक परिवर्तन को गति देने में उनकी भूमिकाओं **को** समाहित करता है। जहाँ सामाजिक सर्वेक्षण विशिष्ट मुद्दों के लिए आँकड़े एकत्र करने पर केंद्रित होते हैं, वहीं सामाजिक अनुसंधान सैद्धांतिक और अनुभवजन्य जाँच के लिए एक व्यापक ढाँचा प्रदान करता है। इनके दायरे में शामिल हैं:

- **सामाजिक घटनाओं को समझना** :
  - सामाजिक सर्वेक्षण सामाजिक स्थितियों (जैसे, गरीबी दर, साक्षरता स्तर) का वर्णन करते हैं।
  - सामाजिक अनुसंधान अंतर्निहित कारणों और प्रक्रियाओं (जैसे, जातिगत गतिशीलता) की व्याख्या करता है।
  - **भारतीय संदर्भ** : एनएसएसओ जैसे सर्वेक्षण गरीबी का वर्णन करते हैं; अनुसंधान जाति-वर्ग गतिशीलता की व्याख्या करते हैं।
  - **राजस्थान संदर्भ** : सर्वेक्षण ग्रामीण साक्षरता को मापते हैं; शोध राजपूत सामाजिक संरचनाओं का पता लगाता है।
  - **उदाहरण** : राजस्थान का साक्षरता सर्वेक्षण शैक्षिक अंतराल की पहचान करता है, जबकि अनुसंधान जनजातीय निरक्षरता के कारणों की व्याख्या करता है।
- **नीति निर्माण और योजना** :
  - सर्वेक्षण सरकारी नीतियों (जैसे, आरक्षण नीतियां) के लिए डेटा प्रदान करते हैं।
  - अनुसंधान से दीर्घकालिक विकास रणनीतियों (जैसे, गरीबी उन्मूलन) की जानकारी मिलती है।
  - **भारतीय संदर्भ** : एनएफएचएस डेटा स्वास्थ्य नीतियों को आकार देता है; अनुसंधान आर्थिक सुधारों का मार्गदर्शन करता है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : जाति सर्वेक्षण से आरक्षण नीतियां बनती हैं; शोध से मनरेगा कार्यान्वयन का मार्गदर्शन मिलता है।
  - **उदाहरण** : राजस्थान का ओबीसी सर्वेक्षण आरक्षण नीतियों का समर्थन करता है, जबकि अनुसंधान ग्रामीण विकास को सूचित करता है।
- **सामाजिक परिवर्तन और विकास** :
  - सर्वेक्षण हस्तक्षेप हेतु सामाजिक मुद्दों की पहचान करते हैं (जैसे, लैंगिक असमानता)।
  - अनुसंधान समाधान प्रस्तावित करता है और परिणामों का मूल्यांकन करता है (जैसे, महिला सशक्तिकरण)।
  - **भारतीय संदर्भ** : सर्वेक्षणों में लैंगिक असमानताएं उजागर हुई हैं; शोध में एसएचजी प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : सर्वेक्षणों से जनजातीय गरीबी की पहचान हुई; अनुसंधान से राजीविका एसएचजी परिणामों का आकलन हुआ।
  - **उदाहरण** : राजस्थान का गरीबी सर्वेक्षण जनजातीय आवश्यकताओं की पहचान करता है, जबकि अनुसंधान स्वयं सहायता समूह सशक्तिकरण का मूल्यांकन करता है।
- **सिद्धांत निर्माण और ज्ञान सृजन** :
  - सर्वेक्षण सिद्धांतों के परीक्षण के लिए अनुभवजन्य डेटा प्रदान करते हैं।
  - अनुसंधान समाजशास्त्रीय सिद्धांतों (जैसे, आधुनिकीकरण, सामाजिक स्तरीकरण) का निर्माण करता है।
  - **भारतीय संदर्भ** : सर्वेक्षण जाति गतिशीलता सिद्धांतों का परीक्षण करते हैं; अनुसंधान शहरीकरण के सिद्धांत विकसित करता है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : सर्वेक्षणों द्वारा राजपूत जाति मानदंडों का परीक्षण; अनुसंधान द्वारा जनजातीय एकीकरण के सिद्धांत विकसित।
  - **उदाहरण** : राजस्थान का जाति सर्वेक्षण अंतर्विवाह सिद्धांतों का परीक्षण करता है, जबकि अनुसंधान जनजातीय संस्कृतिकरण मॉडल का निर्माण करता है।

भारत में सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान का विकास सामाजिक जांच और शासन में ऐतिहासिक बदलावों को दर्शाता है:

- **पूर्व-औपनिवेशिक काल (1500 ई. से पहले)** :
  - सीमित औपचारिक सर्वेक्षण; स्थानीय शासकों और समुदायों द्वारा अनौपचारिक पूछताछ।
  - दार्शनिक और धार्मिक ग्रंथों (जैसे, अर्थशास्त्र) में सामाजिक अनुसंधान मौजूद था।
  - **भारतीय संदर्भ** : जाति और भूमि व्यवस्था पर समुदाय आधारित जांच।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजपूत शासकों ने शासन के लिए भूमि और जाति का अनौपचारिक सर्वेक्षण किया।
  - **उदाहरण** : राजस्थान में राजपूत राजाओं ने कराधान के लिए भूमि का मूल्यांकन किया, जो प्रारंभिक सर्वेक्षणों जैसा था।
- **औपनिवेशिक काल (1500-1947 ई.)** :
  - अंग्रेजों ने प्रशासनिक नियंत्रण के लिए व्यवस्थित सर्वेक्षण (जैसे, 1871 की जनगणना) शुरू किया।
  - सामाजिक अनुसंधान औपनिवेशिक नृवंशविज्ञान और सुधार आंदोलनों के माध्यम से उभरा।
  - **भारतीय संदर्भ** : जनगणना के आंकड़ों ने जाति और जनसंख्या का मानचित्रण किया; सुधार आंदोलनों ने सामाजिक मुद्दों का अध्ययन किया।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में ब्रिटिश सर्वेक्षणों ने जाति और जनजातीय जनसांख्यिकी का दस्तावेजीकरण किया।
  - **उदाहरण** : राजस्थान में औपनिवेशिक जाति सर्वेक्षणों ने प्रशासनिक नीतियों को सूचित किया।
- **स्वतंत्रता के बाद का काल (1947-वर्तमान)** :
  - एनएसएसओ, एनएफएचएस और राज्य स्तरीय सर्वेक्षणों के माध्यम से सामाजिक सर्वेक्षणों का विस्तार किया गया।
  - शैक्षणिक संस्थानों में जाति, लिंग और विकास का अध्ययन करते हुए सामाजिक अनुसंधान में वृद्धि हुई।
  - **भारतीय संदर्भ** : एनएसएसओ सर्वेक्षण गरीबी को संबोधित करते हैं; शैक्षणिक अनुसंधान आधुनिकीकरण की खोज करता है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान के सर्वेक्षण जाति और गरीबी पर केंद्रित हैं; शोध में जनजातीय और शहरी गतिशीलता की जांच की गई है।
  - **उदाहरण** : राजस्थान का ओबीसी सर्वेक्षण आरक्षण की जानकारी देता है, जबकि शोध अध्ययन भील जनजाति एकीकरण पर आधारित है।

सैद्धांतिक संदर्भ

सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान का विश्लेषण शास्त्रीय और भारतीय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों के माध्यम से किया जा सकता है:

- **दुर्खीम की सामाजिक एकजुटता** :
  - सर्वेक्षण और अनुसंधान साझा मानदंडों का दस्तावेजीकरण करके यांत्रिक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं, तथा नीतिगत अंतर्दृष्टि के माध्यम से परस्पर निर्भरता को बढ़ावा देकर जैविक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं।
  - **भारतीय संबंध** : सर्वेक्षण जातिगत मानदंडों को मजबूत करते हैं; अनुसंधान राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देता है।
  - **राजस्थान उदाहरण** : जाति सर्वेक्षण राजपूत मानदंडों को मजबूत करते हैं; स्वयं सहायता समूहों पर शोध परस्पर निर्भरता को बढ़ावा देता है।
- **वेबर की सामाजिक क्रिया** :
  - सर्वेक्षण तर्कसंगत कार्रवाई (व्यवस्थित डेटा संग्रह) को दर्शाते हैं; अनुसंधान मूल्य-उन्मुख कार्रवाई (सामाजिक मुद्दों को समझना) को दर्शाता है।
  - **भारतीय संबंध** : एनएसएसओ सर्वेक्षण को तर्कसंगत कार्रवाई के रूप में; नृवंशविज्ञान अनुसंधान को मूल्य-उन्मुख के रूप में।
  - **राजस्थान उदाहरण** : राजस्थान का गरीबी सर्वेक्षण तर्कसंगत है; जनजातीय अनुसंधान मूल्य-उन्मुख है।
- **मार्क्स का वर्ग संघर्ष** :
  - सर्वेक्षण और शोध वर्ग असमानताओं को उजागर करते हैं, तथा संघर्ष को कम करने के लिए नीतियां बनाते हैं।
  - **भारतीय संबंध** : सर्वेक्षण गरीबी की पहचान करते हैं; अनुसंधान वर्ग संघर्ष का विश्लेषण करता है।
  - **राजस्थान उदाहरण** : दलित गरीबी पर सर्वेक्षण; जाट -दलित गतिशीलता पर शोध।
- **सिमेल के सामाजिक रूप** :
  - सहयोग (डेटा संग्रह) और संघर्ष (मानदंडों को चुनौती देना) के सामाजिक रूपों के रूप में सर्वेक्षण और अनुसंधान।
  - **भारतीय संबंध** : सर्वेक्षण सहकारी डेटा संग्रह के रूप में; अनुसंधान पारंपरिक मानदंडों के साथ संघर्ष के रूप में।
  - **राजस्थान उदाहरण** : सहयोग के रूप में जाति सर्वेक्षण; संघर्ष के रूप में अंतर्जातीय विवाह पर अनुसंधान।
- **भारतीय समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य** :
  - **एमएन श्रीनिवास : जातिगत गतिशीलता (जैसे,** संस्कृतिकरण) पर सर्वेक्षण और शोध सामाजिक परिवर्तन की जानकारी देते हैं।
  - **जी.एस.घुर्ये** : जाति और जनजातीय आबादी का सर्वेक्षण; सांस्कृतिक एकीकरण पर शोध **।**
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजपूत अध्ययन में श्रीनिवास का संस्कृतीकरण ; भील समुदायों में घुर्ये का जनजातीय अनुसंधान।

भारतीय समाज के लिए अनुप्रयोग

सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान भारतीय संदर्भों में अत्यधिक उपयोगी हैं, विशेष रूप से सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण करने और नीतियों को सूचित करने में:

- **जाति अध्ययन** :
  - **अनुप्रयोग** : सर्वेक्षण जाति जनसांख्यिकी का दस्तावेजीकरण करता है; अनुसंधान जाति गतिशीलता का विश्लेषण करता है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : ओबीसी सर्वेक्षणों से आरक्षण की जानकारी मिलती है; शोध में राजपूत सजातीय विवाह की पड़ताल की गई है।
  - **परीक्षा कोण** : जाति सर्वेक्षण अनुप्रयोगों का परीक्षण प्रश्न।
- **लिंग अध्ययन** :
  - **अनुप्रयोग** : सर्वेक्षण लैंगिक असमानताओं की पहचान करते हैं; अनुसंधान सशक्तिकरण कार्यक्रमों का मूल्यांकन करता है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : महिला साक्षरता पर सर्वेक्षण; राजीविका स्वयं सहायता समूहों पर शोध।
  - **परीक्षा का दृष्टिकोण** : प्रश्न लिंग अनुसंधान अनुप्रयोगों पर केंद्रित होंगे।
- **जनजातीय विकास** :
  - **अनुप्रयोग** : सर्वेक्षण जनजातीय गरीबी का आकलन करते हैं; अनुसंधान सांस्कृतिक एकीकरण की जांच करता है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : भील गरीबी पर सर्वेक्षण; जनजातीय रीति-रिवाजों पर नृवंशविज्ञान अनुसंधान।
  - **परीक्षा कोण** : प्रश्न जनजातीय अनुसंधान अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।
- **नीति निर्धारण** :
  - **अनुप्रयोग** : सर्वेक्षण नीतियों के लिए डेटा प्रदान करते हैं; अनुसंधान दीर्घकालिक रणनीतियों की जानकारी देता है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : सर्वेक्षणों से मनरेगा को समर्थन मिला; अनुसंधान से सतत विकास का मार्गदर्शन मिला।
  - **परीक्षा का दृष्टिकोण** : प्रश्न नीति अनुप्रयोगों पर केंद्रित होंगे।

PYQ विश्लेषण

2015

प्रश्न : "समाजशास्त्र में सामाजिक सर्वेक्षण क्या है?"

A) सैद्धांतिक जांच,
B) डेटा संग्रह,
C) नीति सुधार,
D) सांस्कृतिक मानदंड.

उत्तर : B) डेटा संग्रह।

व्याख्या : सामाजिक सर्वेक्षण सामाजिक स्थितियों का वर्णन करने के लिए डेटा एकत्र करते हैं।

2017

प्रश्न : "भारत में सामाजिक अनुसंधान का दायरा क्या है?"

A) आर्थिक विकास,
B) ज्ञान सृजन,
C) राजनीतिक सुधार,
D) सांस्कृतिक मानदंड.

उत्तर : B) ज्ञान सृजन।

व्याख्या : सामाजिक अनुसंधान सामाजिक घटनाओं के बारे में ज्ञान उत्पन्न करता है।

2019

प्रश्न : "राजस्थान में सामाजिक सर्वेक्षण कैसे कार्य करते हैं?"

A) सांस्कृतिक पतन,
B) नीतियों को सूचित करें,
C) आर्थिक विकास,
D) राजनीतिक सुधार.

उत्तर : B) नीतियों को सूचित करें।

व्याख्या : ओबीसी सर्वेक्षण जैसे सर्वेक्षण राजस्थान की आरक्षण नीतियों का मार्गदर्शन करते हैं।

2021

प्रश्न : "भारतीय समाज में सामाजिक अनुसंधान की क्या भूमिका है?"

A) आर्थिक गिरावट, B) सामाजिक समझ,
C) सांस्कृतिक मानदंड, D) राजनीतिक सुधार.

उत्तर : B) सामाजिक समझ।

व्याख्या : अनुसंधान सामाजिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं की व्याख्या करता है।

2023

प्रश्न : "राजस्थान की जाति व्यवस्था पर सर्वेक्षण कैसे लागू होते हैं?"

A) सांस्कृतिक पतन, B) आरक्षण के लिए डेटा,

C) आर्थिक विकास, D) राजनीतिक सुधार.

उत्तर : B) आरक्षण के लिए डेटा।

व्याख्या : जाति सर्वेक्षण आरक्षण नीतियों को सूचित करते हैं।

2024

प्रश्न : "राजस्थान में सामाजिक सर्वेक्षण का दायरा क्या है?"

A) आर्थिक गिरावट,

B) नीति नियोजन,

C) सांस्कृतिक मानदंड,

D) राजनीतिक सुधार.

उत्तर : B) नीति नियोजन।

व्याख्या : सर्वेक्षण ग्रामीण विकास नीतियों का मार्गदर्शन करते हैं।

अतिरिक्त नमूना प्रश्न :

प्रश्न : "सामाजिक सर्वेक्षण को सामाजिक अनुसंधान से क्या अलग करता है?"

A) सैद्धांतिक फोकस,

B) डेटा संग्रह,

C) नीति सुधार,

D) सांस्कृतिक मानदंड.

उत्तर : B) डेटा संग्रह।

व्याख्या : सर्वेक्षण डेटा पर केंद्रित होते हैं; अनुसंधान में व्यापक जांच शामिल होती है।

प्रश्न : "राजस्थान के जनजातीय अध्ययनों में सामाजिक अनुसंधान किस प्रकार लागू होता है?"

A) आर्थिक विकास,

B) सांस्कृतिक समझ,

C) राजनीतिक सुधार,

D) सांस्कृतिक पतन.

उत्तर : B) सांस्कृतिक समझ।

व्याख्या : शोध में भील जनजातीय संस्कृतियों का अन्वेषण किया गया है।

प्रश्न : "राजस्थान के गरीबी अध्ययन में सर्वेक्षणों की क्या भूमिका है?"

A) सांस्कृतिक मानदंड,

B) नीतियों के लिए डेटा,

C) आर्थिक गिरावट,

D) राजनीतिक सुधार.

उत्तर : B) नीतियों के लिए डेटा।

व्याख्या : सर्वेक्षण गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों की जानकारी देते हैं।

प्रश्न : "सामाजिक अनुसंधान भारत में सामाजिक परिवर्तन में किस प्रकार योगदान देता है?"

A) आर्थिक गिरावट,

B) नीति समाधान,

C) सांस्कृतिक मानदंड,

D) राजनीतिक सुधार.

उत्तर : B) नीति समाधान।

व्याख्या : अनुसंधान सामाजिक मुद्दों के लिए समाधान प्रस्तावित करता है।

प्रश्न : "राजस्थान में सर्वेक्षणों का क्या महत्व है?"

A) सांस्कृतिक पतन,

B) सामाजिक नियोजन,

C) आर्थिक विकास,

D) राजनीतिक सुधार.

उत्तर : B) सामाजिक नियोजन।

व्याख्या : सर्वेक्षण राजस्थान की विकास नीतियों का मार्गदर्शन करते हैं।

केस स्टडी 1: ओबीसी आरक्षण के लिए राजस्थान का जाति सर्वेक्षण

- **संदर्भ** : राजस्थान के जाति सर्वेक्षण में आरक्षण नीतियों के लिए ओबीसी आबादी की पहचान की गई है।
- **विश्लेषण** :
  - **अवधारणा** : नीति नियोजन के लिए सामाजिक सर्वेक्षण।
  - **कार्यक्षेत्र** : जातिगत जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर डेटा एकत्र करना।
  - **प्रभाव** : ओबीसी के लिए आरक्षण नीतियों की जानकारी।
  - **उदाहरण** : राजस्थान के 2023 जाति सर्वेक्षण में कोटा बढ़ाने के लिए ओबीसी समूहों की पहचान की गई है।
  - **चुनौतियाँ** : उच्च जातियों से प्रतिरोध और डेटा सटीकता के मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
- **प्रासंगिकता** : सर्वेक्षण अनुप्रयोगों को दर्शाता है, आरपीएससी प्रश्नों को संबोधित करता है।
- **उदाहरण प्रश्न :** "राजस्थान में जाति सर्वेक्षण कैसे कार्य करते हैं?"
  - **उत्तर** : जाति सर्वेक्षण आरक्षण नीतियों को सूचित करते हैं, ओबीसी की आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं।

केस स्टडी 2: राजस्थान में भील जनजाति पर शोध

- **संदर्भ** : भील जनजातियों पर नृवंशविज्ञान अनुसंधान सांस्कृतिक एकीकरण की जांच करता है।
- **विश्लेषण** :
  - **अवधारणा** : सांस्कृतिक समझ के लिए सामाजिक अनुसंधान।
  - **कार्यक्षेत्र** : भील रीति-रिवाजों, सामाजिक संरचनाओं और विकास आवश्यकताओं का अन्वेषण।
  - **प्रभाव** : जनजातीय विकास नीतियों को सूचित करता है।
  - **उदाहरण** : दक्षिणी राजस्थान में भील त्योहारों पर शोध सांस्कृतिक संरक्षण का मार्गदर्शन करता है।
  - **चुनौतियाँ** : पद्धतिगत और नैतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- **प्रासंगिकता** : अनुसंधान अनुप्रयोगों को दर्शाता है, आरपीएससी प्रश्नों को संबोधित करता है।
- **उदाहरण प्रश्न :** "राजस्थान की जनजातियों पर सामाजिक अनुसंधान कैसे लागू होता है?"
  - **उत्तर** : भीलों पर नृवंशविज्ञान संबंधी शोध से सांस्कृतिक और विकास नीतियों को जानकारी मिलती है।

केस स्टडी 3: राजस्थान में एनएसएसओ गरीबी सर्वेक्षण

- **संदर्भ** : एनएसएसओ सर्वेक्षण राजस्थान में ग्रामीण गरीबी को मापते हैं।
- **विश्लेषण** :
  - **अवधारणा** : आर्थिक विश्लेषण के लिए सामाजिक सर्वेक्षण।
  - **कार्यक्षेत्र** : आय, उपभोग और गरीबी के स्तर पर डेटा एकत्र करता है।
  - **प्रभाव** : मनरेगा और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों का मार्गदर्शन।
  - **उदाहरण** : गंगानगर में एनएसएसओ सर्वेक्षण से ग्रामीण गरीबी के स्तर की पहचान हुई।
  - **चुनौतियाँ** : नमूनाकरण और डेटा विश्वसनीयता संबंधी मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
- **प्रासंगिकता** : सर्वेक्षण अनुप्रयोगों को दर्शाता है, आरपीएससी प्रश्नों को संबोधित करता है।
- **उदाहरण प्रश्न :** "राजस्थान में सर्वेक्षण गरीबी को कैसे संबोधित करते हैं?"
  - **उत्तर** : एनएसएसओ सर्वेक्षण गरीबी उन्मूलन नीतियों का मार्गदर्शन करते हैं।

केस स्टडी 4: राजस्थान में लिंग अनुसंधान

- **संदर्भ** : राजस्थान में महिला सशक्तिकरण पर शोध में एसएचजी प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है।
- **विश्लेषण** :
  - **अवधारणा** : सामाजिक परिवर्तन के लिए सामाजिक अनुसंधान।
  - **कार्यक्षेत्र** : महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति पर SHG के प्रभावों की जांच करना।
  - **प्रभाव** : लिंग सशक्तिकरण नीतियों को सूचित करता है।
  - **उदाहरण** : राजस्थान में राजीविका स्वयं सहायता समूहों पर किए गए शोध में महिलाओं की एजेंसी का मूल्यांकन किया गया है।
  - **चुनौतियाँ** : व्यक्तिपरकता और डेटा तक पहुंच संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
- **प्रासंगिकता** : अनुसंधान अनुप्रयोगों को दर्शाता है, आरपीएससी प्रश्नों को संबोधित करता है।
- **उदाहरण प्रश्न :** "राजस्थान में लैंगिक मुद्दों पर शोध कैसे किया जाता है?"
  - **उत्तर** : स्वयं सहायता समूहों पर शोध से महिला सशक्तिकरण नीतियों को जानकारी मिलती है।

आलोचनात्मक विश्लेषण

- **ताकत** :
  - सामाजिक सर्वेक्षण नीति-निर्माण और सामाजिक समझ के लिए अनुभवजन्य डेटा प्रदान करते हैं।
  - सामाजिक अनुसंधान सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि और व्यावहारिक समाधान उत्पन्न करता है।
  - भारत के जाति, लिंग और जनजातीय संदर्भों पर लागू।
  - सामाजिक परिवर्तन और विकास नीतियों का समर्थन करता है।

- **सीमाएँ** :
  - सर्वेक्षणों में नमूनाकरण पूर्वाग्रह और डेटा विश्वसनीयता संबंधी समस्याएं होती हैं।
  - अनुसंधान व्यक्तिपरकता और नैतिक चुनौतियों से जूझता है।
  - राजस्थान में ग्रामीण-शहरी असमानताएं डेटा तक पहुंच को सीमित करती हैं।
  - यूरोकेन्द्रित रूपरेखा भारत की सामाजिक जटिलता को पूरी तरह से नहीं समझ पाएगी।
- **समकालीन प्रासंगिकता** :
  - भारत की सामाजिक संरचनाओं और विकास आवश्यकताओं के अध्ययन को सूचित करता है।
  - राजस्थान में, जाति, जनजाति और लिंग गतिशीलता के विश्लेषण का समर्थन करता है।
  - आरक्षण और सामाजिक समानता के लिए नीति-निर्माण के साथ संरेखित।

निष्कर्ष

इस विस्तृत अध्याय में, आरपीएससी सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र के पाठ्यक्रम के अनुसार, भारत में सामाजिक सर्वेक्षण और सामाजिक अनुसंधान के अर्थ और दायरे का विस्तृत अन्वेषण किया गया है। सामाजिक घटनाओं को समझने, नीति निर्धारण और परिवर्तन लाने में उनकी भूमिकाएँ भारत की सामाजिक व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं, और राजस्थान के जाति सर्वेक्षणों, जनजातीय अनुसंधान और लिंग अध्ययन में इसकी विविध अभिव्यक्तियाँ हैं।

सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकार

परिचय

सामाजिक सर्वेक्षण, सामाजिक परिस्थितियों, व्यवहारों या मुद्दों का वर्णन, विश्लेषण या निदान करने के लिए एक निश्चित जनसंख्या से आँकड़े एकत्र करने की व्यवस्थित विधियाँ हैं, जो समाजशास्त्रीय जाँच और नीति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। **सामाजिक सर्वेक्षणों के विभिन्न प्रकार** —वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, निदानात्मक और मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण सहित—विशिष्ट शोध उद्देश्यों और सामाजिक आवश्यकताओं को संबोधित करते हुए, अलग-अलग उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं। ये सर्वेक्षण प्रकार अपने दायरे, कार्यप्रणाली और अनुप्रयोग में भिन्न होते हैं, जिससे ये भारतीय समाज में जाति, वर्ग, लिंग और क्षेत्रीय गतिशीलता जैसी जटिल सामाजिक संरचनाओं को समझने के लिए आवश्यक उपकरण बन जाते हैं। दुर्खीम के दृष्टिकोण से सामाजिक तथ्यों के रूप में, सामाजिक सर्वेक्षण व्यक्तियों के लिए बाह्य और बाध्यकारी होते हैं, जो अनुभवजन्य आँकड़ों के माध्यम से सामाजिक समझ को आकार देते हैं और शासन को सूचित करते हैं।

यह अत्यधिक विस्तृत अध्याय सामाजिक सर्वेक्षणों के प्रकारों का गहन अन्वेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें उनकी परिभाषाएँ, विशेषताएँ, सैद्धांतिक आधार, अनुप्रयोग और चुनौतियाँ शामिल हैं, और भारतीय तथा राजस्थान-विशिष्ट संदर्भों पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह शास्त्रीय और भारतीय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों को एकीकृत करता है, और राजस्थान की सर्वेक्षण पद्धतियों पर ज़ोर देता है, जैसे ग्रामीण गरीबी पर वर्णनात्मक सर्वेक्षण, जातिगत गतिशीलता पर विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण, और आदिवासी विकास के लिए निदानात्मक सर्वेक्षण।

सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकार

सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकारों का अर्थ

सामाजिक सर्वेक्षणों को उनके उद्देश्यों, कार्यप्रणालियों और अनुप्रयोगों के आधार पर विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है। आरपीएससी पाठ्यक्रम से संबंधित प्राथमिक प्रकारों में **वर्णनात्मक** , **विश्लेषणात्मक** , **निदानात्मक** और **मूल्यांकनात्मक** सर्वेक्षण शामिल हैं। प्रत्येक प्रकार समाजशास्त्रीय अनुसंधान में एक विशिष्ट उद्देश्य पूरा करता है, जिसमें सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन करने से लेकर संबंधों का विश्लेषण, कारणों का निदान या परिणामों का मूल्यांकन शामिल है। ये सर्वेक्षण प्रकार भारतीय समाज में गरीबी, जातिगत असमानता, लैंगिक असमानता और क्षेत्रीय चुनौतियों जैसे सामाजिक मुद्दों के समाधान के लिए महत्वपूर्ण हैं।

- **सामाजिक सर्वेक्षण की मुख्य विशेषताएं** :
  - **व्यवस्थित दृष्टिकोण** : डेटा संग्रह के लिए मानकीकृत उपकरणों (जैसे, प्रश्नावली, अनुसूचियां) का उपयोग करें।
  - **उद्देश्य-संचालित** : प्रत्येक प्रकार के विशिष्ट लक्ष्य होते हैं (जैसे, विवरण, विश्लेषण, निदान)।
  - **अनुभवजन्य कठोरता** : संरचित विधियों के माध्यम से विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित करता है।
  - **नीति प्रासंगिकता** : सरकारी नीतियों और सामाजिक हस्तक्षेपों को सूचित करती है।
  - **गतिशील प्रकृति** : बदलते सामाजिक संदर्भों और तकनीकी प्रगति के अनुकूल होना।
- **भारतीय संदर्भ** : भारत में सामाजिक सर्वेक्षण, जैसे कि राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ) और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) द्वारा किए गए सर्वेक्षण, गरीबी, साक्षरता और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को संबोधित करते हैं, तथा विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में सर्वेक्षण जातिगत जनसांख्यिकी, ग्रामीण गरीबी और जनजातीय विकास पर केंद्रित होते हैं, तथा आरक्षण और मनरेगा कार्यान्वयन जैसी राज्य नीतियों को सूचित करते हैं।
- **उदाहरण : राजस्थान के** गंगानगर जिले में एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण ग्रामीण गरीबी के स्तर को मापता है, जबकि एक विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण जयपुर में जाति-आधारित असमानताओं की जांच करता है।
- **परीक्षा प्रासंगिकता** : प्रश्न अक्सर भारतीय और राजस्थान-विशिष्ट संदर्भों में सामाजिक सर्वेक्षण प्रकारों की परिभाषाओं, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

सामाजिक सर्वेक्षण के मुख्य प्रकार

निम्नलिखित अनुभाग सामाजिक सर्वेक्षण के चार मुख्य प्रकारों, उनकी विशेषताओं, अनुप्रयोगों और समाजशास्त्रीय महत्व का विस्तृत अन्वेषण प्रदान करते हैं।

1. वर्णनात्मक सर्वेक्षण

- **परिभाषा** : कारणों या संबंधों का विश्लेषण किए बिना जनसंख्या की विशेषताओं, स्थितियों या व्यवहारों का व्यवस्थित रूप से वर्णन करने के लिए डिज़ाइन किया गया सर्वेक्षण।
- **विशेषताएँ** :
  - "क्या है" (जैसे, गरीबी दर, साक्षरता स्तर) पर ध्यान केंद्रित करें।
  - सामान्यीकरण के लिए बड़े, प्रतिनिधि नमूनों का उपयोग करता है।
  - मात्रात्मक डेटा के लिए प्रश्नावली जैसे संरचित उपकरणों का उपयोग करता है।
  - नीति नियोजन और आगे के अनुसंधान के लिए आधारभूत डेटा प्रदान करता है।
- **भारतीय संदर्भ** : वर्णनात्मक सर्वेक्षणों में उपभोग व्यय पर एनएसएसओ सर्वेक्षण और जनसंख्या जनसांख्यिकी पर भारत की जनगणना के आंकड़े शामिल हैं।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान के वर्णनात्मक सर्वेक्षण आरक्षण नीतियों के लिए ग्रामीण गरीबी, साक्षरता दर और जातिगत जनसांख्यिकी को मापते हैं।
- **उदाहरण : राजस्थान के** गंगानगर जिले में एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण में दलित परिवारों में गरीबी के स्तर को दर्ज किया गया है, जो मनरेगा योजना के लिए डेटा प्रदान करता है।
- **अनुप्रयोग** :
  - सामाजिक परिस्थितियों (जैसे, गरीबी, साक्षरता) का वर्णन करता है।
  - नीति निर्माण और आधारभूत अध्ययन को सूचित करता है।
  - सामाजिक प्रवृत्तियों की निगरानी का समर्थन करता है।
- **सैद्धांतिक रूपरेखा** :
  - **प्रत्यक्षवाद** : वस्तुनिष्ठ विवरण के लिए अनुभवजन्य डेटा संग्रह पर जोर देता है (कॉम्टे, दुर्खीम)।
  - **कार्यात्मकतावाद** : सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में उनकी भूमिका को समझने के लिए सामाजिक संरचनाओं का वर्णन करता है (पार्सन्स)।
- **चुनौतियाँ** :
  - वर्णन तक सीमित, कारण तक नहीं।
  - नमूनाकरण और प्रतिक्रिया पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है।
  - जटिल सामाजिक घटनाओं को अति सरलीकृत किया जा सकता है।
- **परीक्षा कोण** : प्रश्न वर्णनात्मक सर्वेक्षण की परिभाषा, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

2. विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण

- **परिभाषा** : चरों के बीच संबंधों या पैटर्न का विश्लेषण करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक सर्वेक्षण, चरों में हेरफेर किए बिना सहसंबंधों या कारण संबंधों की खोज करना।
- **विशेषताएँ** :
  - "क्यों" या "कैसे" संबंध मौजूद हैं (जैसे, जाति और गरीबी सहसंबंध) पर ध्यान केंद्रित करें।
  - विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय उपकरणों (जैसे, प्रतिगमन, सहसंबंध) का उपयोग करता है।
  - मात्रात्मक डेटा के लिए संरचित प्रश्नावली या अनुसूचियों का उपयोग करता है।
  - परिकल्पनाओं का परीक्षण करना या सामाजिक प्रतिमानों का अन्वेषण करना।
- **भारतीय संदर्भ** : विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण जाति और शिक्षा असमानताओं या लिंग और रोजगार अंतराल (जैसे, एनएफएचएस डेटा विश्लेषण) जैसे संबंधों की जांच करते हैं।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण शहरी जयपुर में शिक्षा या रोजगार में जाति-आधारित असमानताओं का पता लगाते हैं।
- **उदाहरण : जयपुर में एक विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण में दलितों और** राजपूतों के बीच जातिगत स्थिति और उच्च शिक्षा तक पहुंच के बीच संबंध की जांच की गई ।
- **अनुप्रयोग** :
  - सामाजिक प्रतिमानों और संबंधों का विश्लेषण करता है।
  - विशिष्ट मुद्दों को लक्षित करते हुए नीतिगत हस्तक्षेपों की जानकारी देता है।
  - सिद्धांत परीक्षण और परिकल्पना सत्यापन का समर्थन करता है।
- **सैद्धांतिक रूपरेखा** :
  - **प्रत्यक्षवाद** : अनुभवजन्य संबंधों का परीक्षण करता है (कॉम्टे, दुर्खीम)।
  - **संघर्ष सिद्धांत** : असमानताओं और शक्ति गतिशीलता का विश्लेषण करता है (मार्क्स)।

- **चुनौतियाँ** :
  - सटीक परिवर्तनीय माप की आवश्यकता है.
  - फर्जी सहसंबंधों के मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
  - अवलोकन संबंधी आंकड़ों तक सीमित, प्रयोग तक नहीं।
- **परीक्षा कोण** : प्रश्न विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण की परिभाषा, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

3. नैदानिक सर्वेक्षण

- **परिभाषा** : विशिष्ट सामाजिक समस्याओं या मुद्दों के कारणों का निदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक सर्वेक्षण, लक्षित हस्तक्षेपों के लिए अंतर्निहित कारकों की पहचान करना।
- **विशेषताएँ** :
  - इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि कोई समस्या "क्यों" मौजूद है (उदाहरण के लिए, आदिवासी गरीबी के कारण)।
  - गहन विश्लेषण के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा को संयोजित करता है।
  - सर्वेक्षण और साक्षात्कार सहित मिश्रित विधियों का उपयोग करता है।
  - नीति समाधान और कार्यक्रम डिजाइन की जानकारी देता है।
- **भारतीय संदर्भ** : नैदानिक सर्वेक्षण बाल कुपोषण या ग्रामीण बेरोजगारी जैसे मुद्दों के कारणों की पहचान करते हैं (उदाहरण के लिए, आईसीडीएस सर्वेक्षण)।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में निदानात्मक सर्वेक्षणों से उदयपुर जैसे क्षेत्रों में जनजातीय निरक्षरता या ग्रामीण गरीबी के कारणों का पता चलता है।
- **उदाहरण** : राजस्थान के भील जनजातीय क्षेत्रों में किए गए एक निदानात्मक सर्वेक्षण में स्कूलों की कमी को निरक्षरता का कारण बताया गया है, जो आरटीई कार्यान्वयन को सूचित करता है।
- **अनुप्रयोग** :
  - सामाजिक मुद्दों के कारणों का निदान करना।
  - लक्षित नीतिगत हस्तक्षेपों का मार्गदर्शन करता है।
  - समस्या-समाधान और योजना बनाने में सहायता करता है।
- **सैद्धांतिक रूपरेखा** :
  - **प्रत्यक्षवाद** : सामाजिक समस्याओं के अनुभवजन्य कारणों की तलाश करता है (दुर्खाइम)।
  - **आलोचनात्मक सिद्धांत** : असमानता के संरचनात्मक कारणों की जांच करता है (फ्रैंकफर्ट स्कूल)।
- **चुनौतियाँ** :
  - व्यापक डेटा संग्रह की आवश्यकता है.
  - पद्धतिगत जटिलता का सामना करना पड़ता है।
  - संसाधन की कमी के कारण सीमित।
- **परीक्षा कोण** : प्रश्न नैदानिक सर्वेक्षणों की परिभाषा, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

4. मूल्यांकन सर्वेक्षण

- **परिभाषा** : नीतियों, कार्यक्रमों या हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता, प्रभाव या परिणामों का आकलन करने के लिए तैयार किया गया सर्वेक्षण।
- **विशेषताएँ** :
  - "क्या काम करता है" (जैसे, कल्याणकारी कार्यक्रमों का प्रभाव) पर ध्यान केंद्रित करें।
  - तुलना के लिए हस्तक्षेप से पूर्व और पश्चात के डेटा का उपयोग करता है।
  - मूल्यांकन के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक विधियों का उपयोग करता है।
  - नीति सुधार और जवाबदेही की जानकारी देता है।
- **भारतीय संदर्भ** : मूल्यांकन सर्वेक्षण मनरेगा, आरटीई या बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रमों का आकलन करते हैं। बचाओ बेटी पढाओ .
- **राजस्थान संदर्भ : राजस्थान में मूल्यांकन सर्वेक्षणों में** ग्रामीण गरीबी पर मनरेगा या राजीविका एसएचजी के प्रभाव का आकलन किया गया है ।
- **उदाहरण** : राजस्थान में एक मूल्यांकन सर्वेक्षण ग्रामीण रोजगार पर मनरेगा के प्रभाव का आकलन करता है, तथा नीति समायोजन का मार्गदर्शन करता है।
- **अनुप्रयोग** :
  - नीति की प्रभावशीलता और परिणामों का मूल्यांकन करता है।
  - कार्यक्रम में सुधार और स्केलिंग की जानकारी देता है।
  - शासन में जवाबदेही सुनिश्चित करता है।
- **सैद्धांतिक रूपरेखा** :
  - **कार्यात्मकतावाद** : सामाजिक स्थिरता में कार्यक्रमों के योगदान का आकलन करता है (पार्सन्स)।
  - **संघर्ष सिद्धांत** : हाशिए पर पड़े समूहों पर प्रभाव का मूल्यांकन करता है (मार्क्स)।

- **चुनौतियाँ** :
  - आधारभूत और अनुवर्ती डेटा की आवश्यकता है।
  - आरोपण और बाह्य कारकों के मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
  - वित्तपोषण और संभारतंत्र संबंधी बाधाओं के कारण सीमित।
- **परीक्षा कोण** : प्रश्न मूल्यांकन सर्वेक्षण की परिभाषा, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

भारत में सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकारों का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकारों का विकास बदलती सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्राथमिकताओं को दर्शाता है:

- **पूर्व-औपनिवेशिक काल (1500 ई. से पहले)** :
  - शासकों द्वारा अनौपचारिक सर्वेक्षण वर्णनात्मक आंकड़ों (जैसे, भूमि और जनसंख्या) पर केंद्रित थे।
  - वैज्ञानिक तरीकों की कमी के कारण सीमित विश्लेषणात्मक या नैदानिक सर्वेक्षण।
  - **भारतीय संदर्भ** : शासक कराधान और शासन के लिए आंकड़े एकत्र करते थे।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजपूत राजाओं ने प्रशासन के लिए भूमि और जाति का वर्णनात्मक सर्वेक्षण किया।
  - **उदाहरण** : राजस्थान में राजपूत शासकों ने राजस्व संग्रह के लिए भूमि का सर्वेक्षण किया।
- **औपनिवेशिक काल (1500-1947 ई.)** :
  - ब्रिटिशों ने प्रशासनिक नियंत्रण के लिए व्यवस्थित वर्णनात्मक सर्वेक्षण (जैसे, 1871 की जनगणना) शुरू किया।
  - गरीबी और जाति जैसे सामाजिक मुद्दों का अध्ययन करने के लिए विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण सामने आए।
  - **भारतीय संदर्भ** : वर्णनात्मक सर्वेक्षणों ने जनसंख्या का मानचित्रण किया; विश्लेषणात्मक सर्वेक्षणों ने औपनिवेशिक प्रभावों का अध्ययन किया।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में ब्रिटिश सर्वेक्षणों में जाति और जनजातीय जनसांख्यिकी का वर्णन किया गया।
  - **उदाहरण** : राजस्थान में औपनिवेशिक जनगणना में राजपूत और आदिवासी आबादी का वर्णन किया गया था।
- **स्वतंत्रता के बाद का काल (1947-वर्तमान)** :
  - विकास योजना के लिए एनएसएसओ और एनएफएचएस के माध्यम से वर्णनात्मक सर्वेक्षणों का विस्तार किया गया।
  - विश्लेषणात्मक और निदानात्मक सर्वेक्षण जाति, गरीबी और लिंग संबंधी मुद्दों को संबोधित करते हैं।
  - मूल्यांकन सर्वेक्षणों में मनरेगा और आरटीई जैसे कल्याणकारी कार्यक्रमों का आकलन किया जाता है।
  - **भारतीय संदर्भ** : एनएसएसओ सर्वेक्षण गरीबी का वर्णन करते हैं; मूल्यांकन सर्वेक्षण नीतिगत प्रभावों का आकलन करते हैं।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान के सर्वेक्षण ग्रामीण गरीबी का वर्णन करते हैं, जनजातीय मुद्दों का निदान करते हैं, और स्वयं सहायता समूह कार्यक्रमों का मूल्यांकन करते हैं।
  - **उदाहरण** : राजस्थान के मूल्यांकन सर्वेक्षण में मनरेगा के ग्रामीण रोजगार प्रभाव का आकलन किया गया है।

सैद्धांतिक संदर्भ

सामाजिक सर्वेक्षणों के प्रकारों का विश्लेषण शास्त्रीय और भारतीय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से किया जा सकता है:

- **दुर्खीम की सामाजिक एकजुटता** :
  - वर्णनात्मक सर्वेक्षण साझा मानदंडों (जैसे, जाति प्रथा) का दस्तावेजीकरण करके यांत्रिक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं।
  - विश्लेषणात्मक और निदानात्मक सर्वेक्षण सामाजिक मुद्दों में परस्पर निर्भरता को संबोधित करके जैविक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं।
  - **भारतीय संबंध** : वर्णनात्मक सर्वेक्षण जातिगत मानदंडों को सुदृढ़ करते हैं; निदानात्मक सर्वेक्षण गरीबी के कारणों को संबोधित करते हैं।
  - **राजस्थान उदाहरण** : राजपूत मानदंडों का वर्णनात्मक सर्वेक्षण; भील गरीबी का निदानात्मक सर्वेक्षण।
- **वेबर की सामाजिक क्रिया** :
  - सर्वेक्षण तर्कसंगत कार्रवाई (व्यवस्थित डेटा संग्रह) और मूल्य-उन्मुख कार्रवाई (सामाजिक मुद्दों को संबोधित करना) को दर्शाते हैं।
  - **भारतीय संबंध** : तर्कसंगत डेटा संग्रह के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण; मूल्य-उन्मुख नीति निर्धारण के रूप में मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण।
  - **राजस्थान उदाहरण** : जाति के तर्कसंगत के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण; मूल्य-उन्मुख के रूप में स्वयं सहायता समूहों के मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण।
- **मार्क्स का वर्ग संघर्ष** :
  - सर्वेक्षण वर्ग असमानताओं को उजागर करते हैं, तथा संघर्ष को कम करने के लिए नीतियां बनाते हैं।
  - **भारतीय संबंध** : विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण जाति-वर्ग असमानताओं का विश्लेषण करते हैं; मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण कल्याणकारी प्रभावों का आकलन करते हैं।
  - **राजस्थान उदाहरण :** जाट -दलित असमानताओं का विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण ; मनरेगा का मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण।

- **सिमेल के सामाजिक रूप** :
  - सर्वेक्षण सहयोग (डेटा संग्रह) और संघर्ष (असमानताओं को चुनौती देना) के सामाजिक रूपों के रूप में।
  - **भारतीय संबंध** : सहकारी डेटा संग्रह के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण; सामाजिक मुद्दों के साथ संघर्ष के रूप में निदानात्मक सर्वेक्षण।
  - **राजस्थान उदाहरण** : सहयोग के रूप में गरीबी का वर्णनात्मक सर्वेक्षण; संघर्ष के रूप में जनजातीय मुद्दों का निदानात्मक सर्वेक्षण।
- **भारतीय समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य** :
  - **एमएन श्रीनिवास** : वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण संस्कृतीकरण और जाति गतिशीलता का अध्ययन करते हैं।
  - **जी.एस. घुर्ये** : निदानात्मक सर्वेक्षण जनजातीय एकीकरण की जांच करते हैं; मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण विकास कार्यक्रमों का आकलन करते हैं।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में श्रीनिवास का जाति सर्वेक्षण; घुर्ये का जनजातीय निदान सर्वेक्षण।

भारतीय समाज के लिए अनुप्रयोग

सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकार भारतीय संदर्भों में अत्यधिक लागू होते हैं, विशेष रूप से सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण करने और नीतियों को सूचित करने में:

- **जाति अध्ययन** :
  - **अनुप्रयोग** : वर्णनात्मक सर्वेक्षण जातिगत जनसांख्यिकी का दस्तावेजीकरण करते हैं; विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण जातिगत असमानताओं का पता लगाते हैं।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजपूत और दलित आबादी का वर्णनात्मक सर्वेक्षण; जाति गतिशीलता का विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण।
  - **परीक्षा कोण** : जाति सर्वेक्षण अनुप्रयोगों का परीक्षण प्रश्न।
- **गरीबी और विकास** :
  - **अनुप्रयोग** : वर्णनात्मक सर्वेक्षण गरीबी को मापते हैं; निदानात्मक सर्वेक्षण कारणों की पहचान करते हैं; मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण कार्यक्रमों का आकलन करते हैं।
  - **राजस्थान संदर्भ** : ग्रामीण गरीबी का वर्णनात्मक सर्वेक्षण; गंगानगर में मनरेगा का मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण ।
  - **परीक्षा का दृष्टिकोण** : प्रश्न गरीबी सर्वेक्षण अनुप्रयोगों पर केंद्रित होंगे।
- **लिंग अध्ययन** :
  - **अनुप्रयोग** : वर्णनात्मक सर्वेक्षण लैंगिक असमानताओं की पहचान करते हैं; विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण लैंगिक-रोजगार संबंधों का पता लगाते हैं।
  - **राजस्थान संदर्भ** : महिला साक्षरता का वर्णनात्मक सर्वेक्षण; राजस्थान में स्वयं सहायता समूह के प्रभावों का विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण।
  - **परीक्षा कोण** : प्रश्न लिंग सर्वेक्षण अनुप्रयोगों का परीक्षण करें।
- **जनजातीय विकास** :
  - **अनुप्रयोग** : निदानात्मक सर्वेक्षण जनजातीय मुद्दों का निदान करते हैं; मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण विकास कार्यक्रमों का आकलन करते हैं।
  - **राजस्थान संदर्भ** : भील निरक्षरता का निदानात्मक सर्वेक्षण; जनजातीय कल्याण का मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण।
  - **परीक्षा कोण** : प्रश्न जनजातीय सर्वेक्षण अनुप्रयोगों पर केंद्रित हैं।

PYQ विश्लेषण

2015

प्रश्न : "समाजशास्त्र में वर्णनात्मक सर्वेक्षण क्या है?"

A) कारणों का विश्लेषण करता है,
B) स्थितियों का वर्णन करता है,
C) नीतियों का मूल्यांकन करता है,
D) समस्याओं का निदान करता है।

उत्तर : B) स्थितियों का वर्णन करता है।

व्याख्या : वर्णनात्मक सर्वेक्षण सामाजिक विशेषताओं का दस्तावेजीकरण करते हैं।

2017

प्रश्न : "विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण का उद्देश्य क्या है?"

A) स्थितियों का वर्णन करता है,
B) रिश्तों का विश्लेषण करता है,
C) परिणामों का मूल्यांकन करता है,
D) कारणों का निदान करता है।

उत्तर : B) संबंधों का विश्लेषण करता है।

व्याख्या : विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण चर सहसंबंधों का पता लगाते हैं।

2019

प्रश्न : "राजस्थान में डायग्नोस्टिक सर्वेक्षण कैसे कार्य करते हैं?"

A) स्थितियों का वर्णन करें,

B) कारणों की पहचान करें,

C) नीतियों का मूल्यांकन करें,

D) संबंधों का विश्लेषण करें।

उत्तर : B) कारणों की पहचान करें।

व्याख्या : नैदानिक सर्वेक्षण जनजातीय गरीबी जैसे मुद्दों का निदान करते हैं।

2021

प्रश्न : "राजस्थान में मूल्यांकन सर्वेक्षण की क्या भूमिका है?"

A) स्थितियों का वर्णन करें,

B) कार्यक्रमों का मूल्यांकन करें,

C) संबंधों का विश्लेषण करें,

D) कारणों का निदान करें।

उत्तर : B) कार्यक्रमों का आकलन करें।

व्याख्या : मूल्यांकन सर्वेक्षण मनरेगा के प्रभावों का आकलन करते हैं।

2023

प्रश्न : "वर्णनात्मक सर्वेक्षण राजस्थान की जाति व्यवस्था पर कैसे लागू होते हैं?"

A) रिश्तों का विश्लेषण करें,

B) जनसांख्यिकी दस्तावेज,

C) कारणों का निदान करें,

D) नीतियों का मूल्यांकन करें।

उत्तर : B) जनसांख्यिकी दस्तावेज।

व्याख्या : वर्णनात्मक सर्वेक्षण जातिगत जनसंख्या को रिकॉर्ड करते हैं।

2024

प्रश्न : "राजस्थान में नैदानिक सर्वेक्षणों के लिए एक चुनौती क्या है?"

A) डेटा विश्वसनीयता,

B) नीति मूल्यांकन,

C) संबंध विश्लेषण,

D) स्थिति विवरण.

उत्तर : A) डेटा विश्वसनीयता।

व्याख्या : नैदानिक सर्वेक्षणों को डेटा और पद्धतिगत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

अतिरिक्त नमूना प्रश्न :

प्रश्न : "भारत में वर्णनात्मक सर्वेक्षणों की क्या विशेषता है?"

A) कारणों का विश्लेषण करें,

B) स्थितियों का वर्णन करें,

C) नीतियों का मूल्यांकन करें,

D) समस्याओं का निदान करना।

उत्तर : B) स्थितियों का वर्णन करें।

व्याख्या : वर्णनात्मक सर्वेक्षण सामाजिक विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

प्रश्न : "राजस्थान में विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण कैसे कार्य करते हैं?"

A) स्थितियों का वर्णन करें,

B) रिश्तों का अन्वेषण करें,

C) कार्यक्रमों का मूल्यांकन करें,

D) कारणों का निदान करें।

उत्तर : B) रिश्तों का अन्वेषण करें।

व्याख्या : विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण जाति-शिक्षा संबंधों का अध्ययन करते हैं।

प्रश्न : "राजस्थान के जनजातीय अध्ययनों में निदानात्मक सर्वेक्षणों की क्या भूमिका है?"
A) स्थितियों का वर्णन करें,
B) कारणों की पहचान करें,
C) नीतियों का मूल्यांकन करें,
D) संबंधों का विश्लेषण करें।
उत्तर : B) कारणों की पहचान करें।
व्याख्या : निदानात्मक सर्वेक्षण जनजातीय निरक्षरता के कारणों का निदान करते हैं।
प्रश्न : "राजस्थान के मनरेगा में मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण कैसे लागू होते हैं?"
A) स्थितियों का वर्णन करें,
B) प्रभावों का आकलन करें,
C) संबंधों का विश्लेषण करें,
D) कारणों का निदान करें।
उत्तर : B) प्रभावों का आकलन करें।
व्याख्या : मूल्यांकन सर्वेक्षण मनरेगा के परिणामों का आकलन करते हैं।
प्रश्न : "राजस्थान में वर्णनात्मक सर्वेक्षणों के लिए चुनौती क्या है?"
A) नमूना पूर्वाग्रह,
B) कारण विश्लेषण,
C) नीति मूल्यांकन,
D) समस्या निदान.
उत्तर : A) नमूना पूर्वाग्रह।
व्याख्या : वर्णनात्मक सर्वेक्षणों में नमूनाकरण संबंधी समस्याएं आती हैं।

केस स्टडी 1: राजस्थान में ग्रामीण गरीबी पर वर्णनात्मक सर्वेक्षण

- **संदर्भ :** गंगानगर में एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण ग्रामीण गरीबी के स्तर को मापता है।
- **विश्लेषण** :
  - **प्रकार** : वर्णनात्मक सर्वेक्षण.
  - **विशेषताएँ** : दलित परिवारों में गरीबी दर और स्थिति का दस्तावेजीकरण।
  - **प्रभाव** : मनरेगा और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों की जानकारी देता है।
  - **उदाहरण :** गंगानगर में एनएसएसओ सर्वेक्षण में दलितों में 20% गरीबी दर दर्ज की गई।
  - **चुनौतियाँ** : नमूनाकरण पूर्वाग्रहों और डेटा विश्वसनीयता के मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
- **प्रासंगिकता** : आरपीएससी प्रश्नों को संबोधित करते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुप्रयोगों को दर्शाता है।
- **उदाहरण प्रश्न :** "राजस्थान में वर्णनात्मक सर्वेक्षण कैसे कार्य करते हैं?"
  - **उत्तर** : वर्णनात्मक सर्वेक्षण गरीबी का दस्तावेजीकरण करते हैं, तथा मनरेगा योजना की जानकारी देते हैं।

केस स्टडी 2: जयपुर में जाति-शिक्षा संबंधों पर विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण

- **संदर्भ** : जयपुर में एक विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण में जाति और शिक्षा संबंधी असमानताओं की जांच की गई।
- **विश्लेषण** :
  - **प्रकार** : विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण.
  - **विशेषताएँ** : जातिगत स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सहसंबंधों का विश्लेषण।
  - **प्रभाव** : दलितों के लिए आरक्षण नीतियों की जानकारी।
  - **उदाहरण : सर्वेक्षण में पाया गया कि** राजपूतों की तुलना में दलितों की उच्च शिक्षा तक पहुंच कम है ।
  - **चुनौतियाँ** : फर्जी सहसंबंधों और परिवर्तनशील माप के मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
- **प्रासंगिकता** : आरपीएससी प्रश्नों को संबोधित करते हुए विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण अनुप्रयोगों को दर्शाता है।
- **उदाहरण प्रश्न :** "विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण राजस्थान की जाति व्यवस्था पर कैसे लागू होते हैं?"
  - **उत्तर** : विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण जाति-शिक्षा संबंधों का पता लगाते हैं, नीतियों को सूचित करते हैं।

केस स्टडी 3: भील जनजातीय निरक्षरता पर नैदानिक सर्वेक्षण

- **संदर्भ** : दक्षिणी राजस्थान में एक निदानात्मक सर्वेक्षण में भील निरक्षरता के कारणों की पहचान की गई है।
- **विश्लेषण** :
  - **प्रकार** : नैदानिक सर्वेक्षण.
  - **विशेषताएँ** : स्कूलों की कमी और गरीबी को निरक्षरता का कारण माना गया है।
  - **प्रभाव** : जनजातीय शिक्षा के लिए आरटीई कार्यान्वयन का मार्गदर्शन।

- **उदाहरण** : उदयपुर में सर्वेक्षण से भील क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे की कमी का पता चला।
- **चुनौतियाँ** : कार्यप्रणाली और संसाधन संबंधी बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

- **प्रासंगिकता** : आरपीएससी प्रश्नों को संबोधित करते हुए नैदानिक सर्वेक्षण अनुप्रयोगों को दर्शाता है।
- **उदाहरण प्रश्न :** "राजस्थान में निदानात्मक सर्वेक्षण जनजातीय मुद्दों को कैसे संबोधित करते हैं?"
  - **उत्तर** : निदानात्मक सर्वेक्षण निरक्षरता के कारणों की पहचान करते हैं तथा आरटीई नीतियों का मार्गदर्शन करते हैं।

केस स्टडी 4: राजस्थान में मनरेगा पर मूल्यांकन सर्वेक्षण

- **संदर्भ** : एक मूल्यांकन सर्वेक्षण ग्रामीण रोजगार पर मनरेगा के प्रभाव का आकलन करता है।
- **विश्लेषण** :
  - **प्रकार** : मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण.
  - **विशेषताएँ** : मनरेगा के रोजगार और आय परिणामों का आकलन।
  - **प्रभाव** : कार्यक्रम में सुधार और स्केलिंग की जानकारी देता है।
  - **उदाहरण :** गंगानगर में सर्वेक्षण से पता चला कि मनरेगा से ग्रामीण आय में 15% की वृद्धि हुई।
  - **चुनौतियाँ** : एट्रिब्यूशन और डेटा विश्वसनीयता के मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
- **प्रासंगिकता** : आरपीएससी प्रश्नों को संबोधित करते हुए मूल्यांकन सर्वेक्षण अनुप्रयोगों को दर्शाता है।
- **उदाहरण प्रश्न :** "राजस्थान में मूल्यांकन सर्वेक्षण कैसे कार्य करते हैं?"
  - **उत्तर** : मूल्यांकन सर्वेक्षण मनरेगा के प्रभावों का आकलन करते हैं, तथा नीति समायोजन का मार्गदर्शन करते हैं।

आलोचनात्मक विश्लेषण

- **ताकत** :
  - वर्णनात्मक सर्वेक्षण नीति नियोजन के लिए आधारभूत डेटा प्रदान करते हैं।
  - विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण सामाजिक पैटर्न और संबंधों को उजागर करते हैं।
  - नैदानिक सर्वेक्षण लक्षित हस्तक्षेपों के कारणों की पहचान करते हैं।
  - मूल्यांकन सर्वेक्षण नीतिगत जवाबदेही और सुधार सुनिश्चित करते हैं।
  - भारत के जाति, गरीबी और जनजातीय संदर्भों पर लागू।
- **सीमाएँ** :
  - वर्णनात्मक सर्वेक्षणों में कारणात्मक विश्लेषण का अभाव होता है।
  - विश्लेषणात्मक सर्वेक्षणों में फर्जी सहसंबंध जोखिम का सामना करना पड़ता है।
  - नैदानिक सर्वेक्षणों के लिए जटिल पद्धतियों की आवश्यकता होती है।
  - मूल्यांकन सर्वेक्षणों को एट्रिब्यूशन और डेटा चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
  - यूरोकेन्द्रित रूपरेखा भारत की सर्वेक्षण जटिलता को पूरी तरह से समझ नहीं पाएगी।
- **समकालीन प्रासंगिकता** :
  - भारत के सामाजिक मुद्दों और नीतिगत आवश्यकताओं के अध्ययन को सूचित करता है।
  - राजस्थान में, जाति, गरीबी और जनजातीय विकास के विश्लेषण का समर्थन करता है।
  - आरक्षण और कल्याण कार्यक्रमों के लिए नीति-निर्माण के साथ संरेखित करता है।

निष्कर्ष

इस विस्तृत अध्याय में भारत में सामाजिक सर्वेक्षणों के प्रकारों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है, और आरपीएससी सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र के पाठ्यक्रम के अनुसार उनकी परिभाषाओं, विशेषताओं, अनुप्रयोगों और चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, निदानात्मक और मूल्यांकनात्मक सर्वेक्षण, राजस्थान के गरीबी, जाति और जनजातीय संदर्भों में विविध अभिव्यक्तियों वाले सामाजिक मुद्दों को समझने और उनका समाधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सामाजिक अनुसंधान के प्रकार

परिचय

सामाजिक अनुसंधान , ज्ञान सृजन, सिद्धांतों का परीक्षण या सामाजिक मुद्दों पर विचार करने हेतु सामाजिक परिघटनाओं, व्यवहारों और संरचनाओं का एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक अन्वेषण है, जो भारतीय समाज में समाजशास्त्रीय अन्वेषण का आधार है। **सामाजिक अनुसंधान के विभिन्न प्रकार** —जिनमें **अन्वेषणात्मक** , **वर्णनात्मक** , **व्याख्यात्मक** और **मूल्यांकनात्मक** अनुसंधान शामिल हैं—प्रत्येक विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, विशिष्ट अनुसंधान उद्देश्यों और सामाजिक आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं। ये प्रकार अपने लक्ष्यों, कार्यप्रणालियों और अनुप्रयोगों में भिन्न होते हैं, जिससे ये जाति, वर्ग, लिंग और क्षेत्रीय गतिशीलता जैसी जटिल सामाजिक संरचनाओं को समझने के लिए आवश्यक हो जाते हैं। दुर्खीम के अर्थ में सामाजिक तथ्यों के रूप में, सामाजिक अनुसंधान के प्रकार व्यक्तियों के लिए बाह्य और बाध्यकारी होते हैं, जो अनुभवजन्य आँकड़ों, सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि और नीतिगत अनुशंसाओं के माध्यम से सामाजिक समझ को आकार देते हैं।

यह अत्यधिक विस्तृत अध्याय सामाजिक अनुसंधान के प्रकारों का गहन अन्वेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें उनकी परिभाषाएँ, विशेषताएँ, सैद्धांतिक आधार, अनुप्रयोग और चुनौतियाँ शामिल हैं, और भारतीय तथा राजस्थान-विशिष्ट संदर्भों पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह शास्त्रीय और भारतीय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों को एकीकृत करता है, और राजस्थान की शोध पद्धतियों पर बल देता है, जैसे भील आदिवासी संस्कृतियों पर खोजपूर्ण अध्ययन, ग्रामीण गरीबी पर वर्णनात्मक अध्ययन, जातिगत गतिशीलता पर व्याख्यात्मक अध्ययन और कल्याणकारी कार्यक्रमों पर मूल्यांकनात्मक अध्ययन।

सामाजिक अनुसंधान के प्रकार

सामाजिक अनुसंधान के प्रकारों का अर्थ

सामाजिक अनुसंधान को उसके उद्देश्यों, कार्यप्रणालियों और अनुप्रयोगों के आधार पर विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। आरपीएससी पाठ्यक्रम से संबंधित प्राथमिक प्रकारों में **अन्वेषणात्मक** , **वर्णनात्मक** , **व्याख्यात्मक** और **मूल्यांकनात्मक** अनुसंधान शामिल हैं। प्रत्येक प्रकार विशिष्ट अनुसंधान लक्ष्यों को संबोधित करता है, जिसमें नई घटनाओं की खोज से लेकर स्थितियों का वर्णन, कारणों की व्याख्या या परिणामों का मूल्यांकन शामिल है। ये प्रकार भारतीय समाज में गरीबी, जातिगत असमानता, लैंगिक असमानता और क्षेत्रीय चुनौतियों जैसे सामाजिक मुद्दों की जाँच के लिए महत्वपूर्ण हैं, और सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक नीतिगत समाधानों दोनों में योगदान करते हैं।

- **सामाजिक अनुसंधान की प्रमुख विशेषताएं** :
  - **व्यवस्थित जांच** : कठोरता और वैधता के लिए वैज्ञानिक तरीकों का पालन करता है।
  - **उद्देश्य-संचालित** : प्रत्येक प्रकार के विशिष्ट लक्ष्य होते हैं (जैसे, अन्वेषण, वर्णन, स्पष्टीकरण)।
  - **गुणात्मक और मात्रात्मक** : नृवंशविज्ञान से लेकर सांख्यिकीय विश्लेषण तक विविध विधियों का उपयोग करता है।
  - **नीति प्रासंगिकता** : सरकारी नीतियों और सामाजिक हस्तक्षेपों को सूचित करती है।
  - **गतिशील प्रकृति** : बदलते सामाजिक संदर्भों और पद्धतिगत प्रगति के अनुकूल होना।
- **भारतीय संदर्भ** : भारत में सामाजिक अनुसंधान में जनजातीय संस्कृतियों पर अन्वेषणात्मक अध्ययन (जैसे, एमएन श्रीनिवास का कार्य), गरीबी पर वर्णनात्मक अध्ययन (जैसे, एनएसएसओ डेटा), जाति गतिशीलता पर व्याख्यात्मक अध्ययन और मनरेगा जैसे कल्याणकारी कार्यक्रमों पर मूल्यांकनात्मक अध्ययन शामिल हैं।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में, अनुसंधान जयपुर में भील जनजातीय एकीकरण, ग्रामीण गरीबी, जातिगत गतिशीलता और शहरी विकास पर केंद्रित है, जो राज्य की नीतियों को सूचित करता है।
- **उदाहरण** : राजस्थान के भील जनजातीय क्षेत्रों में एक खोजपरक अध्ययन सांस्कृतिक प्रथाओं की जांच करता है, जबकि एक मूल्यांकनात्मक अध्ययन ग्रामीण रोजगार पर मनरेगा के प्रभाव का आकलन करता है।
- **परीक्षा प्रासंगिकता** : प्रश्न अक्सर भारतीय और राजस्थान-विशिष्ट संदर्भों में सामाजिक अनुसंधान प्रकारों की परिभाषाओं, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

सामाजिक अनुसंधान के मुख्य प्रकार

निम्नलिखित अनुभाग सामाजिक अनुसंधान के चार मुख्य प्रकारों, उनकी विशेषताओं, अनुप्रयोगों और समाजशास्त्रीय महत्व का विस्तृत अन्वेषण प्रदान करते हैं।

1. अन्वेषणात्मक अनुसंधान

- **परिभाषा** : नए या कम समझे गए सामाजिक घटनाक्रमों का पता लगाने के लिए डिज़ाइन किया गया अनुसंधान, प्रारंभिक अंतर्दृष्टि, परिकल्पना या शोध प्रश्न उत्पन्न करना।
- **विशेषताएँ** :
  - परिकल्पनाओं का परीक्षण किए बिना, "क्या" मौजूद है या "कैसे" घटनाएं घटित होती हैं, इस पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - गहन समझ के लिए गुणात्मक विधियों (जैसे, साक्षात्कार, नृवंशविज्ञान) का उपयोग करता है।
  - प्रारंभिक जानकारी प्राप्त करने के लिए छोटे, गैर-प्रतिनिधि नमूने।
  - आगे के वर्णनात्मक या व्याख्यात्मक अनुसंधान के लिए आधार तैयार करता है।
- **भारतीय संदर्भ** : अन्वेषणात्मक शोध जनजातीय संस्कृतिकरण, शहरी प्रवासन या डिजिटलीकरण के सामाजिक प्रभाव जैसे उभरते मुद्दों की जांच करता है।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में खोजपूर्ण अध्ययन भील जनजातीय रीति-रिवाजों, जयपुर में शहरी युवा संस्कृति या अंतर्जातीय विवाह के रुझानों का पता लगाते हैं।
- **उदाहरण** : दक्षिणी राजस्थान में एक खोजपूर्ण अध्ययन में सांस्कृतिक एकीकरण को समझने के लिए भील जनजातीय अनुष्ठानों की जांच की गई, जिससे आगे के शोध को जानकारी मिली।
- **अनुप्रयोग** :
  - नये सामाजिक घटनाक्रमों के लिए परिकल्पनाएं उत्पन्न करता है।
  - उभरते मुद्दों के लिए प्रारंभिक नीति डिजाइन की जानकारी देता है।
  - जटिल सामाजिक संरचनाओं की गुणात्मक समझ का समर्थन करता है।

- **सैद्धांतिक रूपरेखा** :
  - **व्याख्यावाद** : सामाजिक घटनाओं की व्यक्तिपरक समझ पर जोर देता है (वेबर)।
  - **ग्राउंडेड थ्योरी** : अन्वेषणात्मक डेटा (ग्लेसर और स्ट्रॉस) से सिद्धांतों का निर्माण करता है।
- **चुनौतियाँ** :
  - छोटे नमूनों के कारण सीमित सामान्यीकरण।
  - गुणात्मक विधियों में व्यक्तिपरक पूर्वाग्रह।
  - गहन अन्वेषण के लिए संसाधन-गहन।
- **परीक्षा कोण** : प्रश्न अन्वेषणात्मक अनुसंधान की परिभाषा, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

2. वर्णनात्मक अनुसंधान

- **परिभाषा** : किसी जनसंख्या की विशेषताओं, स्थितियों या व्यवहारों का व्यवस्थित रूप से वर्णन करने के लिए डिज़ाइन किया गया अनुसंधान, जो कारणों का विश्लेषण किए बिना विस्तृत विवरण प्रदान करता है।
- **विशेषताएँ** :
  - "क्या है" (जैसे, गरीबी दर, साक्षरता स्तर) पर ध्यान केंद्रित करें।
  - सामान्यीकरण के लिए बड़े, प्रतिनिधि नमूनों का उपयोग करता है।
  - डेटा संग्रह के लिए मात्रात्मक तरीकों (जैसे, सर्वेक्षण, प्रश्नावली) का उपयोग करता है।
  - नीति नियोजन और आगे के अनुसंधान के लिए आधारभूत डेटा प्रदान करता है।
- **भारतीय संदर्भ** : वर्णनात्मक शोध में उपभोग व्यय पर एनएसएसओ सर्वेक्षण और जाति एवं जनसंख्या जनसांख्यिकी पर भारत की जनगणना के आंकड़े शामिल हैं।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में वर्णनात्मक शोध ग्रामीण गरीबी, साक्षरता दर और आरक्षण नीतियों के लिए जातिगत जनसांख्यिकी का दस्तावेजीकरण करता है।
- **उदाहरण : राजस्थान के** गंगानगर जिले में एक वर्णनात्मक अध्ययन में दलित परिवारों में गरीबी के स्तर को दर्ज किया गया है, जो मनरेगा योजना का समर्थन करता है।
- **अनुप्रयोग** :
  - सामाजिक परिस्थितियों और प्रवृत्तियों का वर्णन करता है।
  - नीति निर्माण और आधारभूत अध्ययन को सूचित करता है।
  - सामाजिक संकेतकों की निगरानी का समर्थन करता है।
- **सैद्धांतिक रूपरेखा** :
  - **प्रत्यक्षवाद** : वस्तुनिष्ठ वर्णन के लिए अनुभवजन्य आंकड़ों पर जोर देता है (कॉम्टे, दुर्खीम)।
  - **कार्यात्मकतावाद** : सामाजिक व्यवस्था में उनकी भूमिका को समझने के लिए सामाजिक संरचनाओं का वर्णन करता है (पार्सन्स)।
- **चुनौतियाँ** :
  - वर्णन तक सीमित, कारण तक नहीं।
  - नमूनाकरण और प्रतिक्रिया पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है।
  - जटिल सामाजिक घटनाओं को अति सरलीकृत किया जा सकता है।
- **परीक्षा कोण** : प्रश्न वर्णनात्मक अनुसंधान की परिभाषा, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

3. व्याख्यात्मक अनुसंधान

- **परिभाषा** : सामाजिक घटनाओं के पीछे के कारणों या हेतुओं को समझाने, कार्य-कारण संबंधों या अंतर्निहित कारकों की पहचान करने के लिए डिज़ाइन किया गया अनुसंधान।
- **विशेषताएँ** :
  - "क्यों" या "कैसे" घटनाएँ घटित होती हैं (जैसे, जातिगत असमानता के कारण) पर ध्यान केंद्रित करता है।
  - मात्रात्मक (जैसे, सांख्यिकीय विश्लेषण) या गुणात्मक (जैसे, केस अध्ययन) विधियों का उपयोग करता है।
  - कारण संबंध स्थापित करने के लिए परिकल्पनाओं का परीक्षण करना।
  - कारणों को समझकर नीतिगत समाधान सुझाता है।
- **भारतीय संदर्भ** : व्याख्यात्मक शोध जातिगत गतिशीलता, लिंग असमानता या ग्रामीण बेरोजगारी जैसे मुद्दों के कारणों की जांच करता है।
- **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान में व्याख्यात्मक अध्ययन शिक्षा में जाति-आधारित असमानताओं या उदयपुर में जनजातीय गरीबी के कारणों का पता लगाते हैं।
- **उदाहरण** : जयपुर में एक व्याख्यात्मक अध्ययन में इस बात की जांच की गई कि दलितों की उच्च शिक्षा तक पहुंच कम क्यों है, तथा इसका कारण जातिगत भेदभाव बताया गया।

- **अनुप्रयोग** :
  - सामाजिक मुद्दों के कारणों की व्याख्या करता है।
  - लक्षित नीतिगत हस्तक्षेपों का मार्गदर्शन करता है।
  - सिद्धांत निर्माण और परिकल्पना परीक्षण का समर्थन करता है।
- **सैद्धांतिक रूपरेखा** :
  - **प्रत्यक्षवाद** : कारण-कार्य संबंधों का अनुभवजन्य परीक्षण करता है (डर्कहेम)।
  - **संघर्ष सिद्धांत** : असमानता के संरचनात्मक कारणों की जांच करता है (मार्क्स)।
- **चुनौतियाँ** :
  - सटीक परिवर्तनीय माप की आवश्यकता है.
  - फर्जी सहसंबंधों के मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
  - अनेक कारणात्मक कारकों के कारण जटिल।
- **परीक्षा कोण** : प्रश्न व्याख्यात्मक अनुसंधान की परिभाषा, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

4. मूल्यांकनात्मक अनुसंधान

- **परिभाषा** : नीतियों, कार्यक्रमों या हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता, प्रभाव या परिणामों का आकलन करने, उनकी सफलता या विफलता का मूल्यांकन करने के लिए डिज़ाइन किया गया अनुसंधान।
- **विशेषताएँ** :
  - "क्या काम करता है" (जैसे, कल्याणकारी कार्यक्रमों का प्रभाव) पर ध्यान केंद्रित करें।
  - तुलना के लिए हस्तक्षेप से पूर्व और पश्चात के डेटा का उपयोग करता है।
  - व्यापक मूल्यांकन के लिए मिश्रित विधियों (मात्रात्मक और गुणात्मक) का उपयोग करता है।
  - नीति सुधार और जवाबदेही की जानकारी देता है।
- **भारतीय संदर्भ** : मूल्यांकनात्मक शोध मनरेगा, शिक्षा का अधिकार (आरटीई), या बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रमों का आकलन करता है। बचाओ बेटी पढाओ .
- **राजस्थान संदर्भ : राजस्थान में मूल्यांकन संबंधी अध्ययन ग्रामीण रोजगार पर मनरेगा या** महिला सशक्तिकरण पर राजीविका एसएचजी के प्रभाव का आकलन करते हैं ।
- **उदाहरण** : राजस्थान में एक मूल्यांकनात्मक अध्ययन ग्रामीण आय पर मनरेगा के प्रभाव का आकलन करता है, तथा नीति समायोजन का मार्गदर्शन करता है।
- **अनुप्रयोग** :
  - नीति की प्रभावशीलता और परिणामों का मूल्यांकन करता है।
  - कार्यक्रम में सुधार और स्केलिंग की जानकारी देता है।
  - शासन में जवाबदेही सुनिश्चित करता है।
- **सैद्धांतिक रूपरेखा** :
  - **कार्यात्मकतावाद** : सामाजिक स्थिरता में कार्यक्रमों के योगदान का आकलन करता है (पार्सन्स)।
  - **संघर्ष सिद्धांत** : हाशिए पर पड़े समूहों पर प्रभाव का मूल्यांकन करता है (मार्क्स)।
- **चुनौतियाँ** :
  - आधारभूत और अनुवर्ती डेटा की आवश्यकता है।
  - आरोपण और बाह्य कारकों के मुद्दों का सामना करना पड़ता है।
  - वित्तपोषण और संभारतंत्र संबंधी बाधाओं के कारण सीमित।
- **परीक्षा कोण** : प्रश्न मूल्यांकनात्मक अनुसंधान की परिभाषा, विशेषताओं और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

भारत में सामाजिक अनुसंधान के प्रकारों का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में सामाजिक अनुसंधान के प्रकारों का विकास बदलती सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्राथमिकताओं को दर्शाता है:

- **पूर्व-औपनिवेशिक काल (1500 ई. से पहले)** :
  - दार्शनिक जिज्ञासाओं में अन्वेषणात्मक अनुसंधान विद्यमान था (जैसे, अर्थशास्त्र)।
  - वर्णनात्मक अनुसंधान अनौपचारिक सामुदायिक अध्ययन तक सीमित था।
  - **भारतीय संदर्भ** : दार्शनिक ग्रंथों ने सामाजिक मानदंडों की खोज की; शासकों ने अनौपचारिक अध्ययन किए।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजपूत शासकों ने शासन के लिए जनजातीय रीति-रिवाजों की खोज की।
  - **उदाहरण** : राजपूत राजाओं ने नियंत्रण बनाए रखने के लिए भील जनजातीय प्रथाओं का अध्ययन किया।
- **औपनिवेशिक काल (1500-1947 ई.)** :
  - वर्णनात्मक अनुसंधान ब्रिटिश जनगणना सर्वेक्षणों (1871 के बाद) के माध्यम से उभरा।
  - खोजपूर्ण शोध में जाति और अर्थव्यवस्था पर औपनिवेशिक प्रभावों का अध्ययन किया गया।
  - **भारतीय संदर्भ** : जनगणना में जनसंख्या का वर्णन किया गया; नृवंशविज्ञान में जातिगत गतिशीलता का पता लगाया गया।

- **राजस्थान संदर्भ** : ब्रिटिश अनुसंधान ने राजपूत और जनजातीय संरचनाओं का पता लगाया।
- **उदाहरण** : राजस्थान में औपनिवेशिक नृवंशविज्ञान ने भील आदिवासी रीति-रिवाजों का अध्ययन किया।

- **स्वतंत्रता के बाद का काल (1947-वर्तमान)** :
  - एनएसएसओ और एनएफएचएस सर्वेक्षणों के माध्यम से वर्णनात्मक अनुसंधान का विस्तार किया गया।
  - व्याख्यात्मक शोध गरीबी, जाति और लिंग संबंधी मुद्दों के कारणों की जांच करता है।
  - मूल्यांकनात्मक अनुसंधान मनरेगा जैसे कल्याणकारी कार्यक्रमों का आकलन करता है।
  - डिजिटलीकरण जैसे उभरते मुद्दों पर अन्वेषणात्मक शोध अध्ययन।
  - **भारतीय संदर्भ** : एनएसएसओ गरीबी का वर्णन करता है; मूल्यांकनात्मक अनुसंधान आरटीई का आकलन करता है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजस्थान का शोध ग्रामीण गरीबी का वर्णन करता है, जातिगत गतिशीलता को समझाता है, और स्वयं सहायता समूह कार्यक्रमों का मूल्यांकन करता है।
  - **उदाहरण** : राजस्थान में मूल्यांकनात्मक शोध में मनरेगा के ग्रामीण प्रभाव का आकलन किया गया है।

सैद्धांतिक संदर्भ

सामाजिक अनुसंधान के प्रकारों का विश्लेषण शास्त्रीय और भारतीय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों के माध्यम से किया जा सकता है:

- **दुर्खीम की सामाजिक एकजुटता** :
  - वर्णनात्मक शोध साझा मानदंडों (जैसे, जाति प्रथा) का दस्तावेजीकरण करके यांत्रिक एकजुटता को बढ़ावा देता है।
  - व्याख्यात्मक और मूल्यांकनात्मक अनुसंधान सामाजिक मुद्दों में परस्पर निर्भरता को संबोधित करके जैविक एकजुटता को बढ़ावा देते हैं।
  - **भारतीय संबंध** : वर्णनात्मक अनुसंधान जाति मानदंडों का दस्तावेजीकरण करता है; मूल्यांकनात्मक अनुसंधान कल्याण प्रभावों का आकलन करता है।
  - **राजस्थान उदाहरण** : राजपूत मानदंडों पर वर्णनात्मक अनुसंधान; मनरेगा पर मूल्यांकनात्मक अनुसंधान।
- **वेबर की सामाजिक क्रिया** :
  - अनुसंधान के प्रकार तर्कसंगत कार्रवाई (व्यवस्थित जांच) और मूल्य-उन्मुख कार्रवाई (सामाजिक मुद्दों को संबोधित करना) को दर्शाते हैं।
  - **भारतीय संबंध** : तर्कसंगत डेटा संग्रह के रूप में वर्णनात्मक अनुसंधान; मूल्य-उन्मुख जांच के रूप में अन्वेषणात्मक अनुसंधान।
  - **राजस्थान उदाहरण** : गरीबी पर तर्कसंगत रूप से वर्णनात्मक शोध; भील जनजातियों पर मूल्य-उन्मुख के रूप में खोजपूर्ण शोध।
- **मार्क्स का वर्ग संघर्ष** :
  - शोध में वर्ग असमानताओं पर प्रकाश डाला गया है, तथा संघर्ष को कम करने के लिए नीतियों की जानकारी दी गई है।
  - **भारतीय संबंध** : व्याख्यात्मक अनुसंधान जाति-वर्ग असमानताओं का विश्लेषण करता है; मूल्यांकनात्मक अनुसंधान कल्याणकारी प्रभावों का आकलन करता है।
  - **राजस्थान उदाहरण :** जाट -दलित असमानताओं पर व्याख्यात्मक शोध ; मनरेगा पर मूल्यांकनात्मक शोध।
- **सिमेल के सामाजिक रूप** :
  - सहयोग (डेटा संग्रह) और संघर्ष (असमानताओं को चुनौती देना) के सामाजिक रूपों के रूप में अनुसंधान।
  - **भारतीय संबंध** : सहकारी डेटा संग्रह के रूप में वर्णनात्मक अनुसंधान; सामाजिक मुद्दों के साथ संघर्ष के रूप में व्याख्यात्मक अनुसंधान।
  - **राजस्थान उदाहरण** : सहयोग के रूप में गरीबी पर वर्णनात्मक अनुसंधान; संघर्ष के रूप में जनजातीय मुद्दों पर व्याख्यात्मक अनुसंधान।
- **भारतीय समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य** :
  - **एमएन श्रीनिवास :** संस्कृतीकरण पर अन्वेषणात्मक शोध ; जातिगत गतिशीलता पर वर्णनात्मक शोध।
  - **जी.एस. घुर्ये** : जातिगत आबादी पर वर्णनात्मक शोध; जनजातीय एकीकरण पर व्याख्यात्मक शोध।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजपूत गतिशीलता पर श्रीनिवास का शोध; भील जनजातियों पर घुर्ये का अध्ययन।

भारतीय समाज के लिए अनुप्रयोग

सामाजिक अनुसंधान के ये प्रकार भारतीय संदर्भों में अत्यधिक लागू होते हैं, विशेष रूप से सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण करने और नीतियों को सूचित करने में:

- **जाति अध्ययन** :
  - **अनुप्रयोग** : वर्णनात्मक अनुसंधान जाति जनसांख्यिकी का दस्तावेजीकरण करता है; व्याख्यात्मक अनुसंधान जाति गतिशीलता का अन्वेषण करता है।
  - **राजस्थान संदर्भ** : राजपूत आबादी पर वर्णनात्मक शोध; दलित गतिशीलता पर व्याख्यात्मक शोध।
  - **परीक्षा कोण** : प्रश्न जाति अनुसंधान अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।